प्रदूषण

प्रदषण का अर्थ है-वातावरण का अशुद्ध हो जाना। प्रदूषण की समस्या एक भयंकर समस्या के रूप में उभर रही है। इससे मानव जाति के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यहाँ तक कि जीव-जंतुओं भी बुरा प्रभाव पड़ता है।

प्रदूषण चार प्रकार का होता है : (1) वायु प्रदूषण, (2) जल प्रदूषण, (3) ध्वनि प्रदूषण, (4) भूमि प्रदूषण।

वाय प्रदूषण कारखानों की चिमनियों से निकलने वाले धुएँ से, कार, मोटर, बस, स्कूटर से निकलने वाले धुएँ से तथा घर में खाना पकाने में जलने वाले ईंधन से फैलता है। कारखानों से निकलने वाली गैसें भी वाय में मिलकर वायु को दूषित कर देती हैं। वायु प्रदूषण से श्वास रोग, खाँसी व फेफड़े के रोग हो जाते हैं। इससे वस्त्र, धातु तथा प्राचीन इमारतों को भी क्षति पहुँचती है।

जल प्रदूषण पानी के स्रोतों में नहाने, कपड़े धोने जानवरों को नहलाने से फैलता है। घर के गंदे पानी का तालाब, नदी में मिलने से और कारखानों के बचे हए कूड़े-करकट तथा अन्य पदार्थों को नदियों में छोड़ने से जल प्रदूषण होता है। हमारे देश में तो शवों की राख व शवों को भी नदियों में बहा देते हैं, जिससे जल दूषित हो जाता है। ऐसा जल पीने योग्य नहीं रहता। दूषित जल पीने से पेचिश, हैजा, आंत्रशोध जैसी बीमारियाँ हो जाती हैं।